प्रातःक्लास 19/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे–2 रूहानी ..... बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। समझाते उनको हैं जो बेसमझ होते हैं। स्कूल में टीचर पढ़ाते हैं; क्योंकि बच्चे बेसमझ हैं। बच्चे पढ़ाई से समझ जाते हैं। तुम बच्चे भी पढ़ाई से समझते हो। यह तो समझते हो हमको पढ़ाने वाला कौन है। यह तो कब भूलो नहीं। पढ़ाने वाला टीचर है सुप्रीम बाप। तो उनकी मत पर चलना है। श्रेष्ठ बनना है। वे श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ होते हैं सूर्यवंशी। भल चन्द्रवंशी भी श्रेष्ठ हैं; परन्तु यह हैं श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ। तुम यहां आये हो श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनने। तुम बच्चे जानते हो हमको ऐसा बनना है। ऐसा स्कूल 5000 वर्ष के बाद ही खुलता है। यहां तुम समझ कर बैठे हो। यह है सच–2 सत का संग। सत है ऊँच ते ऊँच। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ। उनका तुमको संग है। वह बैठकर सतयुग का श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ देवता बनाते हैं। अर्थात् फूल बनाते हैं। तुम कांटे से फूल बनते जाते हो। कोई फौरन बन जाते हैं कोई को टाइम लगता है। बच्चे जानते हैं यह है संगम युग। सो भी सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। निश्चय है कि यह पुरुषोत्तम बनने का युग है। पुरुषोत्तम भी कौन सा? ऊँच ते ऊँच आदि सनातन देवी–देवता धर्म की भी जो महाराजा–महरानी हैं वह बनने लिए तुम यहां आते हो। कम नहीं। समझते हो हम आये हैं बेहद के बाप से बेहद सतयुग का सुख लेने। हद की जो भी बातें हैं वह सभी ख़त्म हो जाते हैं। हद के बाप हद के भाई चाचे, काके, मामे हद की पाई पैसे की मिलकियत आद जिसमें बहुत मोहर रहता है यह सभी खलास हो जानी है। बाप समझाते हैं यह मिलकियत आद हर के हैं। अभी तुमको बेहद में चलना है। बेहद की मिलकियत प्राप्त करने लिए यहां तुम आये हो। और तो सभी हैं हद की चीज़ें। शरीर भी हद का है। बीमार पड़ता है, विनाश हो पड़ता है अकाले मृत्यु हो जाती है। आजकल तो देखो क्या–2 बनाते रहते हैं। होशियारी की कमाल कर दिखाते हैं। माया का पॉम्प कितना है। सांइस वाले खूब हिम्मत कर रहे हैं। जिनके पास बहुत महल–माड़ियां आदि हैं वह तो समझते हैं अभी हमारे लिए सतयुग है। यह नहीं समझते हैं कि सतयुग में एक धर्म होता है। वह नई दुनियां होती है। बाप कहते हैं यह बिल्कुल ही बेसमझ हैं। कितने तुम समझदार बनते हो। ऊपर चढ़ते हो फिर सीढ़ी नीचे उतरते हो। सतयुग में तो समझदार थे। फिर 84 जन्म लेते–2 बेसमझ बन जाते हैं। अपन को बेसमझ समझना ही चाहिए। फिर आकर बाप समझदार बनाते हैं। जिसको ही पारस बुद्धि कहते हैं। तुम जानते हो हम पारस बुद्धि बहुत ही समझदार थे। गीत भी है ना बाबा आप जो वर्सा देते हो सारी ज़मीन आकाश सभी के हम मालिक बन जाते हैं। कोई भी हम से छीन नहीं सकता। कोई का दख़ल नहीं हो सकता। बाप बहुत–2 देते हैं। इससे जास्ती झोली को भर न सके। जब ऐसा बाप मिला है जिसको आधा कल्प याद किया है, दुःख में सुमिरण करते हैं ना। जब सुख मिल जाता है तो फिर सुमिर(ण) करने की दरकार ही नहीं। दुःख में सभी सुमिरण करते हैं। हाय राम। अनेक प्रकार के अक्षर बोलते हैं। सतयुग में ऐसी(ऐसे) कोई अक्षर होते ही नहीं। तुम बच्चे यहां आये हो पढ़ने लिए बाप के सम्मुख। बाप की डायरैक्शन से। इन डायरैक्ट ज्ञान बाप देते नहीं। ज्ञान डायरैक्ट ही मिलता है। बाप को आना पड़ता है। कहते हैं मीठे–2 बच्चों पास आता हूँ। मुझे बुलाते हो ओ बाबा–दादा। बाप भी रेसपॉन्ड करते हैं ओ बच्चों। अभी मुझे अच्छी रीत याद करो। भूलो नहीं। माया के विघ्न तो अनेक आवेंगे। तुम्हारी पढ़ाई छुड़ा कर तुमको देह अभिमान में लावेंगी; इसलिए खबरदार रहो। यह सच्चा–2 सतसंग है। ऊपर चढ़ने का। वह और सभी सतसंग आद है उतराई की। सत का संग एक ही बार होता है। झूठ का संग जन्म–जन्मांतर अनेक बार होते हैं। बाप बच्चों को कहते हैं यह तुम्हारा अंतिम जन्म है। अभी वहां चलना है जहां कोई भी अप्राप्त वस्तु नहीं होती। जिसके लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। यह जो बाबा कहते हैं यह तुम अभी सुनते हो। वहां यह कुछ भी पता नहीं पड़ेगा। अभी तुम कहां जाते हो? अपने सुखधाम में। सुखधाम तुम्हारा ही था। तुम सुखधाम में थे। अभी दुःखधाम में हो। बाबा ने बहुत सहज रास्ता बताया है। वही याद करो। हमारा घर है शान्तिधाम। वहां से हम स्वर्ग़ में आवेंगे। और कोई स्वर्ग़ धाम में आता नहीं। सिवाय तुम्हारे।

तो तुम ही सिमरण करते हो। हम पहले–2 सुख मे जाते हैं फिर दुःख में। कलियुग में सुखधाम होता नहीं। सुख मिलता ही नहीं; इसलिए सन्यासी भी कहते हैं सुख काग विष्टा समान है। अभी बच्चे अच्छी रीत समझते हैं। हम घर जा रहे हैं। बाबा आया हुआ है हमको ले जाने लिए। हम पतितों को पावन बनाकर ले जावेंगे। हम पावन बनेंगे याद की यात्रा से। यात्रा में बहुत नीचे ऊपर होना होता है। कोई तो बीमार पड़ जाते हैं। फिर लौट आते हैं। यह भी ऐसे हैं। यह है रूहानी यात्रा। अंत मते सो गति हो जावेगी। हम अभी अपने शान्तिधाम जा रहे हैं। है बहुत सहज; परन्तु माया बहुत भुलाती है। माया के साथ ही तुम्हारी युद्ध है। बाप बहुत सहज कर समझाते हैं। हम अभी शान्तिधाम जाते हैं। बाप को ही याद करते हैं। दैवी गुण धारण करते हैं। पवित्र बनते हैं। बस 3–4 बातें हैं मुख्य। जो बुद्धि में रखना है। विनाश तो होना ही है। 5000 वर्ष पहले भी हम गये थे फिर पहले ही हम आये। फिर जावेंगे। गायन भी है राम गयो रावण गयो जाके बहु परिवार। जाना तो सभी है शान्तिधाम। तुम जो पढ़ते हो उस पढ़ाई अनुसार पद पाते हो। तुम्हारी एमऑबजेक्ट सामने खड़ी है। कोई कह हम सा. करें। यह (चित्र ल.ना. का) सा. नहीं है। तब क्या है। इसके सिवाय किसका सा.? बेहद के बाप का। और तो कोई सा. काम के नहीं। बाप का सा. चाहते हैं। बाप से मीठी कोई चीज़ नहीं। बाप कहते हैं मीठे–2 बच्चों पहले अपना सा. किया है? आत्मा कहती है बाबा का सा. करें। तो अपना सा. किया है? यह तो तुम बच्चे जान गये हो। अभी समझ मिली है हम आत्मा है। हमारा घर है शान्तिधाम। वहां से हम आत्माएं आती हैं पार्ट बजाने। ड्रामा के प्लैन अनुसार पहले–2 सतयुग में हम आते हैं। आदि और अंत का यह है पुरुषोत्तम संगम युग। इसमें सिर्फ ब्राह्मण ही होते हैं। और कोई नहीं। संगम युग पर ही सिर्फ ब्राह्मण। कलियुग में तो अनेकानेक धर्म कुल हैं। सतयुग में एक ही डिनायस्टी होगी। यह तो सहेज है ना। इस समय तुम संगम युगी ईश्वरीय परिवार के हो। न सतयुगी हो, न कलियुगी हो। यह तुम ही जानते हो कि हम संगमयुगी ब्राह्मण हैं। बाहर वाले कोई नहीं जानते। यह भी जानते हो कल्प–2 बाप आकर ऐसी पढ़ाई पढ़ाते हैं। यहां तुम बैठे हो तो यही स्मृति में आना चाहिए शान्तिधाम–सुखधाम। और यह है दुःखधाम। इस दुःखधाम का है वैराग्य। अथवा सन्यास बुद्धि से। वह कोई बुद्धि से सन्यास नहीं करते हैं। वह तो घर–बार छोड़ सन्यास करते हैं। तुमको कब बाप नहीं कहते हैं कि घर–बार छोड़ो। हां। इतना ज़रूर है भारत की सेवा करनी है। वा अपनी सेवा करनी है। सेवा तो घर में भी कर सकते हैं। पढ़ने लिए आना है ज़रूर। फिर होशियार होकर और को भी आप समान बनाना है। टाइम तो बहुत थोड़ा है। गायन भी है बहुत गई थोड़ी रही। बहुत गई कब सुनी? परम्परा से नहीं। द्वापर से जब तमोप्रधान बनते हो तब ही कहते हैं बहुत गई..... दुनियां के मनुष्य तो बिल्कुल ही घोर–अंधियारे में हैं। समझते हैं अजन 40 हज़ार वर्ष पड़े हैं। तुमको बाप समझाते हैं बच्चों अभी बाकी थोड़ा समय है। बहुत–2 झगड़े आद हैं। आपस में लड़ते ही रहते हैं। दिन–प्रतिदिन बुद्धि तमोप्रधान बनती जाती है। कितने ढेर मनुष्य हैं। सतयुग नई दुनियां में इतने मनुष्य होंगे ही नहीं। नई दुनियां है स्वर्ग। वहां बहुत ही थोड़े आदमी हैं। बक्र को फिरना ज़रूर है। ड्रामा में एक सेकण्ड का भी फ़र्क नहीं पड़ सकता। अभी बच्चों को बेहद में टिकना है। सारी दुनियां में जो कुछ चल रहा है सब नूँध है। जूं मिसल ड्रामा चल रहा है। अभी ड्रामा का चक्र पूरा हो फिर रिपीट होना है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी रिपीट होनी है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी सिवाय तुम बच्चों और कोई नहीं जानते। रचना के आदि, मध्य, अंत को कहा जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी। सिवाय तुम बच्चों के और तो सभी घोर–अंधियारे में हैं। कल्प–2 घोर–अंधियारे में ही रह जाते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो कलियुग का अंत और सतयुग का आदि है। फिर वही आकर पढ़ेंगे। जो सतयुग में जाने वाले होंगे। अनेक बार तुमने पढ़ा है। अपना स्वर्ग स्थापन करते हो श्रीमत

पर। यह भी जानते हो ऊँच ते ऊँच भगवान आते भी हैं भारत में। कल्प पहले भी आये थे। तुम कहेंगे कल्प–2 ऐसे बाप आते हैं। कहते कल्प–2 में ऐसे ही स्थापन करूँगा। विनाश भी तुम देखते हो। तुम्हारी बुद्धि में सभी बैठता जाता है। जानते हो स्थापना, विनाश, पालना का कर्तव्य कैसे होता है। तुम जानते हो फिर औरों को समझाना है। आगे नहीं जानते थे। बाप को जानने से ही बाप द्वारा तुम सभी कुछ जान जाते हो। वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी यर्थात् रीति से तुम जानते हो। मनुष्य कैसे तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हैं यह बाप तुमको समझा रहे हैं। तुमको फिर औरों को समझाना है; क्योंकि सभी बुद्धि हीन अर्थात् पत्थर बुद्धि है। तुम अभी पारस बुद्धि बन रहे हो। सतयुग में होते ही हैं पारस बुद्धि। पत्थर बुद्धि कलियुग में होते हैं। यह है पुरुषोत्तम संगम युग। इनको ही गीता एपीसोड कहा जाता है। जब पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि बनते हो। गीता सुनाने वाला तो भगवान खुद है। मनुष्य नहीं सुनाये। तुम आत्माएं सुनते हो फिर औरों को सुनाते हो। इनको कहा जाता है रूहानी नॉलेज। जो रूहानी भाईयों को समझाते हैं। वृद्धि को पाते रहते हैं। जानते हो सतयुग का सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी झाड़ है। पहले है सूर्यवंशी। फिर उनके साथ है चन्द्रवंशी। तुम जानते हो बाप आकर के सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी डिनायस्टी स्थापन करते हैं। किन द्वारा? ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण कुलभूषणों द्वारा। बाप श्रीमत देते हैं। यह समझने की बातें हैं। दिल पर नोट रहना है। यह तो बहुत सहज है। यह है दुःखधाम। अभी हमको घर जाना है। कलियुग के बाद है सतयुग। बहुत तो बहुत छोटी और सहज है। भल तुम न पढ़ी हो तो भी कोई हर्जा नहीं जो लिखना जानते हैं उनसे फिर सुनना चाहिए। शिवबाबा है सभी आत्माओं का बाप। अभी उनसे वर्सा लेना है। बाप निश्चय करेंगे तो स्वर्ग़ का वर्सा मिलेगा। अन्दर में यह अजपा जाप चलता रहे। शिवबाबा से बेहद सुख स्वर्ग का मिल रहा है; इसलिए शिवबाबा को याद ज़रूर करना है। सभी को हक है बेहद के बाप से वर्सा लेने का जैसे हद का बर्थ राइट मिलता है वैसे यह फिर है बेहद का। शिवबाबा से तुमको सारे विश्व का राज्य मिलता है। छोटे–2 बच्चों को भी यह समझाना चाहिए। हरेक आत्मा का हक है बाप से बर्थ राइट लेने का। कल्प–2 लेते भी ज़रूर हैं। तुम वर्सा लेते हो जीवन मुक्ति का। जिनको मुक्ति का फल मिलता है वह भी जीवन मुक्ति में आते ज़रूर हैं। पहला जन्म तो सुख का ही होता है। तुम्हारा यह है 84 वां जन्म। यह नॉलेज सारी तुम्हारी बुद्धि में रहनी चाहिए। बेहद का बाप हमको प(ढ़ाते) हैं। यह भूलों मत। गीता में सिर्फ़ नाम बदल दिया है। कितनी बड़ी ते बड़ी भूल है। सिवाय तुम्हारे और कोई को पता नहीं है। भारत का शास्त्र भी मुख्य है गीता। तुम चित्रों के ऊपर में भी लिखते हो शिव भगवानुवाचः वही ऊँच ते ऊँच हैं। कृष्ण तो देहधारी हो जाता है। देहधारी कब ज्ञान दे न सके। उसमें रूहानी ज्ञान होता नहीं। तुमको समझाया जाता है भाई समझो। जो भी मनुष्य मात्र हैं और किसको भी यह शिक्षा नहीं मिलती। भल गीता भी सुनाते हैं कि भगवानुवाच काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से तुम जगत जीत बनेंगे; परन्तु समझते नहीं है। अभी भगवान तो है ट्रुथ। देवताएं भी भगवान से सत्य सीखे हैं। कृष्ण ने भी पद कहां से पाया। ल.ना. यह कैसे बने। तुम इन्हों के पुजारी थे; परन्तु यह पता थोड़े ही था कि इन्होंने राज्य कैसे पाया। क्या कर्म किये। कोई बता सकेंगे? अभी तुम ही जानते हो। निराकार बाप ने इन्हों को कैसे कर्म सिखाया। ब्रह्मा तन से शिवबाबा ने इनको ऐसा बनाया। यह श्रेष्ठ है ना। अभी तुम हो प्रजापिता ब्रह्मा कुमार–कुमारियां। तुम्हारे पास नॉलेज रूहानी बाप की। तुम समझते हो हम भगवान को जान गये। ऊँच ते ऊँच भगवान वह है निराकार। उनका साकार रूप है नहीं। बाकी जो भी देखते हो वह साकार है। मन्दिरों में भी लिंग देखते हो। अर्थात् उनको शरीर नहीं है। ऐसे नहीं कि नाम–रूप से न्यारा है। लिंग है, नाम है तब तो पूजा करते हैं। फिर न्यारा कैसे कहेंगे। पत्थर बुद्धि मनुष्य है ना। अभी तुम समझते हो और सभी देह धारियों का नाम पड़ता है। जन्मपत्री है। शिवबाबा तो है निराकार। उनका जन्म पत्री नही। और सभी मनुष्य मात्र के जन्म पत्री हैं। कृष्ण के हैं नम्बरवन। जो वर्ष–2 बनाते हैं। शिवजयन्ति भी मनाते हैं। शिवबाबा है निराकार।

कल्याणकारी। बाप आते हैं तो ज़रूर वर्सा देंगे। उनका नाम ही है शिव। दूसरा कोई उनका नाम पड़ता ही नहीं। जो बात करता है वह भी निराकार। यह है रूहानी नॉलेज तो रूहानी बाप ही देते हैं। वह बाप भी टीचर भी है। सद्गुरू भी है। वह एक ही है। कितना अच्छी रीत पढ़ाते हैं। बच्चे जानते हैं रूहानी बाबा हम रूहों को पढ़ाते हैं। भक्ति मार्ग में कब सुना है क्या कि आत्माओं को परमात्मा पढ़ाते हैं। नहीं। वहां तो भगवानुवाच होता नहीं। कृष्ण को भगवान क्यों कह देते; क्योंकि भगवान ने कृष्ण को ऐसा बनाया; इसलिए उनको भी भगवान–भगवती कह देते हैं। कहेंगे इन्हों को ऐसा किसने बनाया? भगवान ने। भगवान तो अलग चीज़ हो गया ना। कैसे पढ़ाया यह तुम ही जानते हो। तुम बन रहे हो। गाया जाता है सहज याद और सहज ज्ञान। ज्ञान किसका देते हैं। क्या शास्त्रों का? यह कोई शास्त्र तो नहीं पढ़ते हैं। ब्रह्मा द्वारा बाप स्थापना करते हैं। स्थापना ज्ञान से होता है ना। भाग्यशाली रथ पर बैठ ज्ञान देते हैं। बाप तुमको कहते हैं तुम पदमापदम भाग्यशाली हो। बाप तुमको कितना ऊँच बना रहे हैं। तुम यह ल.ना. बनते हो। शरीर तो तुम भी बदलेंगे। तुम यहां आये ही हो मनुष्य से देवता बनने लिए। पहले–2 फिर तुम देवता बनते हो। फिर उतरते हो। 5000 वर्ष बाद कुम्भ होता है। कुम्भ संगम को कहा जाता है। ज्ञान सागर बाप को तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं जानते। ज्ञान सागर शिवबाबा की सारी जीवन कहानी तुम बच्चे जानते हो। बाप कहते हैं मैं आकर अपनी जीवन कहानी और रचना के आदि, मध्य, अंत की कहानी सुनाता हूँ। जो तुम अभी सुन रहे हो। कहते हैं ना देवताओं का छाया नहीं पड़ता। मनुष्य का छाया पड़ता है। शिवबाबा का छाया प(ड) सकता है क्या। बिन्दी का क्या छाया होगा। जनावर आद का छाया होता है। छाया सभी के होते हैं। देवताओं का भी पड़ता है; परन्तु इस पतित सृष्टि में नहीं। वह रहते ही हैं पावन सृष्टि में। तुम बच्चे बाप के पास आते हो रिफ्रेश होने लिए। जानते हो बाबा हमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। कैसे, सिर्फ़ कहते हैं अलफ को याद करो तो बादशाही तुम्हारी है। बेहद का बाप बेहद की बादशाही देने वाला है। अलफ़ को जानने से तुम स्वर्ग़वासी ज़रूर बनेंगे। हम गैरन्टी करते हैं। जो जानते हैं वही स्वर्ग़ में जावेंगे; परन्तु उसमें भी राजाई है। जितना जो पढ़ेंगे उतना ऊँच पद पावेंगे। पढ़ना ज़रूर है। बाप पढ़ाते हैं तो स्टूडेन्ट का फ़र्ज है पढ़ना। बाप से कितनी बड़ी लॉट्री मिलती है। यह ल.ना. बनने की तो क्यों न हम लेवें। बाप कहते हैं नॉलेज तो बहुत ही सहज है। औरों को भी देनी है। राजाई स्थापन हो रही है प्रजा भी बनानी है। जो बहुत सर्विस करते हैं वह सभी को प्रि(य) लगते हैं। ऊँच पद भी पाते हैं। यह है रेस। कहे की? याद की यात्रा की। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। आत्मा तो तुम हो ही। शान्तिधाम में शरीर होता ही नहीं। तुम रहवासी वहां के हो फिर यहां पार्ट बजाने आते हो। बाप कहते हैं मैं भी साधारण तन में आता हूँ। ब्रह्मा द्वारा स्थापना लगा हुआ है। तुम देखते हो स्थापना हो रही है। तुमसे पूछते हैं तुम क्या सर्विस करते हो। बोलो तुम जो मांगते हो वह हम सर्विस करते हैं। विश्व में शान्ति मांगते हो ना। हम वह सर्विस करते हैं। ब्लड से हम लिखकर देते हैं 9 वर्ष के अन्दर विश्व में शान्ति स्थापन कर दिखावेंगे। विश्व में शान्ति थी ना इनके राज्य में शान्ति थी। एक राज्य था। अभी फिर रिपीट कर रहे हैं। शान्तिधाम जाने लिए तुम बाप को याद करते हो। पुराना शरीर छोड़ घर जाना है यह तो बहुत अच्छा है। यह प्रैक्टिस करनी है। फिर जो श्रीमत पर चलेंगे वही श्रेष्ठ बनेंगे। नम्बरवार भी जावेंगे अपनु(ने) पुरुषार्थ अनुसार। जो नम्बर चाहिए बनो। बाबा–म(म्)मा को फॉलों करो। तो तुम माला में आ जावेंगे। माला का ज्ञान भी किसको नहीं है। कोई भी देहधारी को यह ज्ञान नहीं है कि माला किसकी बनी हुई है। सभी कहते हैं माला जपो ; परन्तु है किसकी बनी हुई वह तो बताओ। कब नहीं बतावेंगे। ऊपर में है शिवबाबा फिर ब्रह्मा–सरस्वती। फिर है माला। प्रवृत्ति मार्ग की जोड़ी है। निवृत्ति मार्ग की माला होती नहीं। यह बेहद का सन्यास। वह है हद का। पुरानी छोड़ नई दुनियां में जाने पुरुषार्थ करते हो। बाप कहते मुझे याद करो। माया कहती अपने पति को याद करो। गृहस्थ व्यवहार में रहते देखते हुये न देखो। मुझे याद करो तो पावन बनेंगे। ओम।